International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 30-10-2022, Accepted: 16-11-2022, Published: 02-12-2022
Volume 8, Issue 6, 2022, Page No. 18-19

महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी–वेदना

डॉ० पूनम भारद्वाज
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, आर्य कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हापुड़, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
आधुनिक हिंदी साहित्य में महिला उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में नारी जीवन को खुलकर व्यक्त किया है। उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, प्रभा खेतान, मृदुला गर्ग, मृणाल पांडे, मैत्रेयी पुष्पा, चित्रा मुद्गल, ममता कालिया, नासिरा शर्मा, मन्नू भंडारी, शिवानी आदि प्रमुख उपन्यासकार हैं। इन लेखिकाओं ने अबोध और नए एहसास के माध्यम से गहरे अनुभव जगत का साक्षात्कार कराया है। उषा प्रियवंदा के उपन्यासों की नायिकाएँ भारतीय परिवेश में पली हुयी हैं, परंतु साथ ही साथ अपनी बुद्धिवादिता, स्वतंत्र विचार–शक्ति एवं शिक्षा के कारण उन पर पाश्चात्य संस्कारों का भी पर्याप्त प्रभाव दिखायी देता है। पूर्णतरू भारतीय जीवन पद्धति को वे अपना नहीं सकती और न ही वे पूर्णतः पाश्चात्य ढंग की बन सकती हैं। स्त्री–लेखन– उस वर्ग का लेखन है, जो शोषण और दमनकारी पुरुष से प्रभावी अंग रहा है। स्त्री–विमर्श में पुरुष का विरोध नहीं है, बल्कि 'पुरुष पर निर्भरता' का विरोध हो रहा है। आज की नारी–लम्बी लड़ाई रही है वह पुरुष से भिन्न अपनी पहचान बनाने में लगी है। हार भी रही है, पर हार–थककर शांत नहीं बैठ रही। वह सिर उठाकर आगे बढ़ने की सतत् कोशिश में लगी है। स्त्री यदि इन तमाम जकड़नों से मुक्त नहीं होती तो समाज की मुक्ति भी संभव नहीं होगी।

मूल शब्दः उपन्यास, नारी, पुरुष, जीवन, समाज, शोषित, शिकार, स्त्री

प्रस्तावना
उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'पचपन खंभे लाल दीवारें' में सुषमा को अपने सहयोगियों पर दुरूख होता है। उसने कभी किसी की व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप नहीं किया। कभी किसी की बुराई नहीं की, फिर भी उन्होंने प्रिंसिपल से उसकी रिपोर्ट कर दी और उसे अनैतिक आचरण के लिए उत्तरदाई ठहराया।[1] उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'रुकोगी नहीं राधिकाश की नायिका राधिका जब अक्षय से पहली बार मिलती है। तब वह उसकी तरफ आकर्षित हो जाती है। उससे अपना दर्द बांटती है और सोचती है कि उसके पिता ने राधिका से बहुत बार सुना था कि नितांत अपरिचित से दुरूख गाथा कहकर मन हल्का हो जाता है। अक्षय उसके लिए अपरिचित ही था। पापा ने जब अपने जीवन की राह को चुन लिया है तो वह क्यों नहीं स्वतंत्र और निर्मम होकर अपनी राह खोज लेती।[2]

कृष्णा सोबती के 'सूरजमुखी अँधेरे के' उपन्यास में रतिका यानी रत्ती बाल्यकाल में ही यौन शोषण का शिकार हुई है, वह आजीवन स्नेह वंचित रहती है। उसकी आत्मा लहुलुहान हो गई है। उस पर एक गंदी लड़की का टैग लग जाता है। वह उम्र भर उस अपराध की सजा भुगत रही है। जो इसने कभी किया ही नहीं। जो उसे भीतर से तोड़ता है। वह अपनी अस्मिता को बुझने नहीं देती। एक बलात्कृत स्त्री का भी अपना स्वाभिमान होता है। जिसे वह अंत तक बचाए रखने की जद्दोजेहद करती है। इस प्रकार रत्ती का बचपन में हुआ बलात्कार उसका पीछा नहीं छोड़ता है। वह अंत तक पुरुषों से संबंध में असहजता को अनुभव करती है। इस प्रकार यह उपन्यास बलात्कार की शिकार बेटियों के संघर्ष की गाथा है। वह स्वयं मन में बार–बार दोहराती है कि; "रत्ती अच्छी लड़की नहीं, रत्ती कोई औरत नहीं, वह सिर्फ गीली लकड़ी है; जब भी जलेगी, धुआ देगी, सिर्फ धुंआ।"[3]

प्रभा खेतान के 'छिन्नमस्ता' की नायिका प्रिया, बचपन में भाई द्वारा यौन शोषण का शिकार हुई और घर के लोग उसे सलाह देते हैं, "चुप किसी से ना कहना।" वह जीवन भर इस कलंक को ढोती रहती है। वह खुद की नजरों में अद्भुत बन जाती है और स्वयं से घृणा करने लगती है। एक संभ्रांत परिवार का अकेला लड़का प्रो० मुखर्जी प्रिया की जिंदगी में आता है। वह कहता है, "मैं तुमसे प्रेम करता हूं, केवल तुमसे।" वह प्रिया को अपने घर ले जाता है। प्रिया बिना किसी शर्त के, स्वयं को उसे पूरी तरह समर्पित कर देती है। यहां भी वह छली जाती है। प्रो० शादी करके पत्नी को घर लेकर आता है और प्रिया को धमकाता हुआ कहता है, "मूर्ख लड़की मैंने कब कहा था कि मैं तुमसे शादी करूंगा। हम दोनों ने मौज की। बस बात खत्म। और सुनो! फिर कभी यहां मत आना। मैं एक शादीशुदा इंसान हूं।"[4]

मृदुला गर्ग के 'कठगुलाब' में एक ओर कठगुलाब है तो दूसरी ओर उसको विनष्ट करने वाला कठफोड़वा (एक पक्षी) है। जो अपनी चौंच से काठ को छेदता है। लेखिका का मानना है कि स्त्रियां गुलाब नहीं, जो उग आने पर अपने आप खिल भी जाता है। वे कठगुलाब हैं, जिन्हें थोड़ी सी देखभाल के साथ खिलाना पड़ता है। 'कठगुलाबश के नारी पात्र– स्मिता, मारियान, नमिता– सब पुरुष पात्रों से शोषित एवं पीड़ित हैं। स्मिता, अपने जीजा से शोषित है। वह अपनी बहन की मदद से घर से भाग जाती है और फिर वह सोचती है– "जिस चारदीवारी को छोड़ कर गई थी, वह मेरा घर कब था? मैं तो उस नरक से जान छुड़ाकर भागी थी ना।"[5] प्राचीन काल से परंपरागत रूप से चली आ रही मान्यता हमारी रग–रग में बसी है। नारी चाहे शिक्षित हो या अशिक्षित, उसे एक ही नजर से देखा जाता है। उसका परम कर्तव्य चूल्हा चौका और बच्चा पालन तक ही सीमित है। अगर वह कोई भूल करती है तो उसे बहुत पीटा जाता है। 'कठगुलाबश की पात्र नमिता का पति कहता है, "औरत का जिस्म भगवान ने मार खाने को ही बनाया है।"[6] इस प्रकार मारियान और नमिता अपने पति से शोषित हैं।'कठगुलाब' का प्रतीकात्मक अर्थ है दृ 'नारी की जिजीविषा'। लेखिका का मानना है कि स्त्रियों में अतिरिक्त सजगता, साहस, धीरज, आस्था तथा दृढ़ प्रतिज्ञा का होना आवश्यक है। उसे सिर्फ अपनी ही रक्षा नहीं करनी है वरन् भावी पीढ़ी को भी संस्कारित करना है। प्रस्तुत उपन्यास में नारी पर घटित अन्याय, अत्याचार और उसकी वेदना के साथ नर–नारी संबंधों की जटिल बनावट और नारी की छटपटाहट का प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है।

चित्रा मुद्गल ने श्आवाँ' उपन्यास में स्त्री के दुख–दर्द और नारी–मुक्ति के सवाल को उपन्यास के केंद्र में रखा है। इस

औपन्यासिक कथा की दो धाराएं हैं। एक, मजदूर जगत की और दूसरी, अमीरों व पूँजीपतियों की। दोनों ही धाराओं की नारी, दुनिया में औरत होने की सजा भुगतती हैं। पिता की बीमारी, आर्थिक संकट और पारिवारिक जिम्मेदारी को महसूस करते हुए, नमिता की जब अपनी बी० ए० की पढ़ाई बीच में ही छूट जाती है। तब ऐसी स्थिति में अन्ना साहब की कृपा से अपने पिता के स्थान पर डेढ़ हजार रुपए महीने के लिए काम करने को तैयार हो जाती है। जब वह 'कामगार अघाड़ीश पहुँचती है, तब अन्ना साहब से उसे यह शिक्षा मिलती है कि हर पिता तुल्य आदमी शपिताश नहीं होता। सिर्फ 'पुरुषश होता है। अन्ना साहब के अश्लील आचरण के कारण वह नौकरी त्याग देती है।

चित्रा मुद्गल के 'एक जमीन अपनी' उपन्यास में विज्ञापन की दुनिया मे हलाल की जाती स्त्री की कहानी है। जो आर्थिक विपन्नता के कारण, भूख की ज्वाला का शिकार होकर विज्ञापन मंडी पहुँचती है। जहाँ उसका माल बनाकर उपयोग किया जाता है। उनमें जीवन के संश्लिष्ट एवं बहुआयामी यथार्थ को पहचानने की अद्भुत क्षमता है। उन्होंने मानव जीवन में प्रतिदिन घटित होने वाली समस्याओं को जीवंत रूप में व्यक्त किया है।

शिवानी के 'कृष्णकली' उपन्यास में मणिक और मुनीर को वेश्या दिखाया गया है। मणिक और मुनीर अनेक पुरुषों से धोखा खा चुकी हैं। मणिक वेश्या पुत्री है, वह भी इस काम में ग्राहकों को आकर्षित करने का काम करती है। वह कहती है, "हमारी आंचल ग्रंथि क्या एक ही पुरुष के चादर से बंधी रह सकती है? यह तो हर पल, हर दिन खुल–खुलकर नए–नए चहरे को गाँठ से बंधती रहती है। हम हर चादर की गाँठ के साथ ऐसे ही खिंची चली गई।"7 शिवानी ने इस उपन्यास के माध्यम से वेश्या जीवन की वेदना–गाथा को व्यक्त किया है। शिवानी के 'चौदह फेरे' उपन्यास में नंदी का पति, मल्लिका से अवैध संबंध रखता है। नंदी जीवन भर घुट–घुटकर जीने वाली भारतीय नारी पात्र है। अंत में नंदी परिवार को छोड़कर संन्यासिनी बन जाती है। शिवानी ने आधुनिक समाज की अनैतिकता का चित्रण किया है। इसी उपन्यास में कर्नल अपनी पत्नी से कहते हैं, "मुझे अक्सर दौरे पर बाहर रहना पड़ता है, रात आधी रात मेरे कमरे में दासियों की तरह मिलने वाले आते रहते हैं, तुम्हें इसी कमरे में रहना होगा, मेरे किसी काम में तुम दखल नहीं दे सकोगी।"8 प्रस्तुत उपन्यास में शिवानी ने भारतीय जीवन मूल्यों को दाँव पर लगाते हुए, तत्कालीन समाज की क्षीण वैचारिक स्थिति को उजागर किया है।

ममता कालिया के 'लड़कियाँ' उपन्यास की प्रमुख स्त्री पात्र लल्ली, किसी की दासी या भोग्या नहीं बनना चाहती इसलिए वह विवाह न करने का निर्णय लेती है। वह विवाह को एक बंधन मानती है। ममता कालिया ने अपने उपन्यासों में नारी के दोयम दर्जे का स्वरूप प्रकट किया है । जिसमें नारी का स्वयं का अस्तित्व तो कहीं नहीं होता। वह किसी की बेटी होती है और किसी की बहू। दोनों परिवारों की जरूरतें पूरी करने में वह अपनी जरूरतों को भूल ही जाती है। उनके उपन्यास ''नरक दर नरक' में उषा और जहन की प्रेम–कहानी लिफ्ट में चुंबन के साथ शुरू होती है। जगन के दुस्साहस पर उषा स्तंभित भी है और स्पंदित भी। विवाहोपरांत जगन को जब भी कोई परेशानी होती या कोई दुरूख होता तो उषा हमेशा उसके दुरूख में शामिल होती, परंतु जगन कोई न कोई बात पिन की तरह उसे चुभो देता। जगन कहता है, "अब तो घर भी कॉलेज होता जा रहा हैं।३. शुक्र है, तुम्हारे लिये अभी कॉलेज ही बना है। मेरे लिए तो यह वामशक्कत सी क्लास कैद है।[9] उषा अपने वैवाहिक जीवन की दिनचर्या से बहुत परंशान है और उसका जीवन अस्त–व्यस्त हो रहा है।

- नासिरा शर्मा के 'शाल्मली' उपन्यास की नायिका शाल्मली, अपने शादीशुदा जीवन से संतुष्ट नहीं है। इसका कारण है, उसका पति नरेश हर वक्त उसे नीचा दिखाता है। उसकी मजाक उड़ाता हैं। नरेश उस पर कई बंदिशें भी लगाता है, "मैंने तुम्हें नौकरी करने की छूट दी है। इसका अर्थ यह नहीं है कि तुम अपने को पूर्ण स्वतंत्र समझने लगो। तुम औरत हो। अपनी मर्यादा को पहचानो। मैं मर्द हूं। कहीं भी आ जा सकता हूं।"[10] शाल्मली पति की इन ओछी हरकतों से परेशान है। वह कुछ दिनों के लिए गाँव आ गयी; सास मां भी अपने बेटे के व्यवहार को देखकर नाखुश है। नरेश की माँ शाल्मली से कहती है– "मैं इन सालों से तेरे पास रहकर जान पाई बहूरी। औरत जन्मजली कहीं स्वतंत्र नहीं। कहीं खूँटे से तंग बंधी, तो कहीं उसके गले में बंधी रस्सी थोड़ी लंबी या अधिक लंबी।"[11] युग बदले, परिस्थितियाँ बदली, पर नारी की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। शाल्मली पढ़ी–लिखी, आधुनिक युवती है। वह पुरुषों का नारी के प्रति दृष्टिकोण व्यक्त करते हुए कहती है– "जब औरतें अनगढ़, अनपढ़ मिलती हैं, तो पुरुष उनसे कुढ़े–। वे बाहर की तरफ भागते हैं। जब शिक्षित चुस्त–औरतें पत्नी के रूप में मिल जाती हैं तो उनसे घबराहट का अहसास होता है और भयभीत होकर तीसरी किस्म की औरतों की तरफ भागते हैं। क्या वे स्वयं जानते हैं कि उन्हें कैसी औरतें, कैसी पत्नियाँ चाहिए?" [12]

इस प्रकार स्त्री–लेखन– उस वर्ग का लेखन है, जो शोषण और दमनकारी पुरुष से प्रभावी अंग रहा है। स्त्री–विमर्श में पुरुष का विरोध नहीं है, बल्कि श्पुरुष पर निर्भरताश का विरोध हो रहा है। आज की नारी–लम्बी लड़ाई रही है वह पुरुष से भिन्न अपनी पहचान बनाने में लगी है। हार भी रही है, पर हार–थककर शांत नहीं बैठ रही। वह सिर उठाकर आगे बढ़ने की सतत् कोशिश में लगी है। स्त्री यदि इन तमाम जकड़नों से मुक्त नहीं होती तो समाज की मुक्ति भी संभव नहीं होगी। आज वह धनोपार्जन की क्षमता का परिचय दे रही है और उसे नेतृत्व की सफलता का भी बोध है।

संदर्भ सूची

1. उषा प्रियंवदा 1961 पचपन खंभे लाल दीवारें, पृ० 143
2. उषा प्रियंवदा 1967 रुकोगी नहीं राधिका, पृ० 67
3. कृष्णा सोबती 1972 सूरजमुखी अंधेरे के, सुरंगें सर्ग
4. प्रभा खेतान 1993 छिन्नमस्ता, पृ०122
5. मृदुला गर्ग 1996 कठगुलाब, छठा संस्करण 2010 पृ० 09
6. मृदुला गर्ग 1996 कठगुलाब, छठा संस्करण 2010 पृ० 177
7. शिवानी 1987 कृष्णकली, द्वितीय संस्करण, पृ. 20–21
8. शिवानी 2010 चौदह फेरे, द्वितीय संस्करण, पृ. 23
9. ममता कालिया 1975 नरक दर नरक, पृ० 69
10. नासिरा शर्मा 1987 शाल्मली, पृ० 33
11. नासिरा शर्मा 1987 शाल्मली, पृ० 167
12. नासिरा शर्मा1987 शाल्मली पृ० 154